27/01/22

Unit – 2

मेरे राम का मुकुट भीग रहा है

– विद्यानिवास मिश्र

Q→ 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का प्रकाश काल ?

⇒ 1974

● **सारांश** :— डॉ. विद्यानिवास मिश्र के निबंधों का प्रतिपाद्य विषय गरीमा पूर्ण है। इन्होंने भारतीय संस्कृति, प्रकृति, साहित्य तथा लोक परंपरा के आयामों का उद्‌घाटन किया है।

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' विद्यानिवास मिश्र द्वारा रचित विचारात्मक निबंध है। प्रस्तुत निबंध में लेखक के गहन विचारों का परिणाम दिखाई देता है। निबंध में लेखक अपने कुछ विचार प्रकट कर तथा अपने कुछ प्रश्नों का उत्तर खोजता है। यह विचार और सभी प्रश्न लेखक ने जीवन की एक घटना से निकालते हैं।

वर्तमान पीढ़ी को यह समझाना की उन लेखकर पिछली पीढ़ी कितनी संवेदनाशील है और हर स्थिति में उनके मंगल की कामना करती है। लेखक का एक पुत्र जो किशोर अवस्था का है तथा लेखक के घर आई एक मेहमान के साथ संगीत के कार्यक्रम में रात को जाता है, जहाँ से लौटने में उन्हें देर हो जाती है। उनकी प्रतीक्षा करते हुए लेखक अपने विचारों की ~~दुनिया~~ दुनिया में खो जाते हैं तथा समाज की विभिन्न परिस्थितियों और समस्याओं को लेकर उनके मन में

(इस para को उद्देश्य में भी लिख सकते है।)

प्रश्न और विचार एक साथ उठने लगते हैं। प्रख्यात: साहित्यकार विद्यामिश्र का निबंध 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है', अवलंबित है, भारतीय लोक सांस्कृति पर आधारित लोक समझ पर, जहाँ हर परिस्थितियों घटनाओं का रस बने जाने की परंपरा राम के ही दिग्दर्शन में रही है। वैसे तो राम युगों - युगों से भारतीय उपमहाद्वीप संस्कृति के केंद्र में होते हैं। चाहे समय कैसा और कोई भी क्यों न रहा हो, पर राम के बाद राम ~~सच्च~~ राज्य की स्थापना की परिकल्पना को भी आसरा नहीं मिला स्थापना की चिंता हमेशा बनी रही। लोक वैसे ही चाहे हम महलों - दुमहलों में ही क्यों न रहे, वनवासी राम को लेकर भी हमारी चिंता कभी खत्म नहीं हुई।

लोक कथाओं में, लोक साहित्य में, लोक गीतों में, मंगल कार्यों, शादी विवाह के मौके पर राम ही याद आते हैं। पता नहीं कितने युग बिते पर अभी भी हम अपने को कोसते हुए। राम से उलाहना देते हैं राम बईमान अकेले चली गइले। निर्मोही राम सबको छोड़कर चले गए। खुद ही सबको मना कर सौगंध दे वन में चले गए। उनकी बईमानी यह की जो खुशी और प्रसंता चितवन की छाह उनके साथ रहने से सहज मोल जाता वह छीन गया। निर्मोही इसलिए की ऐसा करते हुए उन्हें सब का मोह नहीं आया। तो फिर अयोध्या रहकर अपने साथ गुजरी हर घटनाओं पर राम की ही चिंता बनी रहती है। बरसात हुई तो मन फिरा की वन में राम भींग ही रहे होंगे उनके साथ माता सिता और भाईया लक्ष्मण भी भींग रहे होंगे। पुरी भारतीय लोक संस्कृति ही राम से जुड़ी घटनाओं परिघटनाओं से अपने को परिपुष्ठ करती है ———

"मेरे राम के भीजे मुकुटवा लछिमन के पटुकवा
मेरी सीता के भीजें सेनुरवा त राम घर लौटहिं।"

मेरे राम का मुकुट भी रहा होगा, मेरे लखन का पटुकता (दुपट्टा) भीग रहा होगा, मेरी सीता की माँग का सिंदुर भीग रहा होगा, मेरे राम घर लौटे लौट आते हैं।

आज भी जब हम नौकरी-पेशे को लेकर घर से बाहर जाते हैं, घर के बड़े-बुजुर्ग कोसते हैं कैसा वनवास मिल गया है।

मन फिर घूम गया कौशल्या की ओर लाखों-करोड़ों कौशल्याओं की ओर, और लाखों करोड़ों कौशल्याओं के द्वारा मुखरित एक अनाम-अरूप कौशल्या की ओर इन सबके राम वन में निर्वसित हैं पर क्या बात है कि मुकुट अभी भी अनेक माथो पर बँधा है और उसी के भीगने की इतनी चिंता है क्या बात है कि आज भी काशी की रामलीला आरंभ होने के पूर्व एक निश्चित मुहूर्त में मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है क्या बात है कि तुलसीदास ने कानन को 'सत अवध समाना' कहा और चित्रकूट में ही पहुँचने पर उन्हें कलि की कुटिल कुचाल दीख पड़ी, बात है कि आज भी वनवासी धनुर्धर राम ही लोकमानस के राजा राम बने हुए हैं कहीं-न कहीं इन सबके बीच एक संगति होनी चाहिए।

मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ इसलिए राम को राजकीय वेश में उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था कौशल्या के मातृ-स्नेह में था वह कैसे उतरता। वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगें तो भीगें, मुकुट न भीगने पाए। इसकी चिंता बनी रही।

राम तो वन से लौट आए, सीता को लक्ष्मण फिर निर्वासित कर आए (वस्तुतः राम का निर्वासन ही सीता का दुहरा निर्वासन है)। पर लोक मानस में राम की वनयात्रा अभी नहीं रुकी। मुकुट, दुपट्टे और सिंदूर के भीगने की आशंका अभी भी साल रही है। कितनी अयोध्याएँ बसीं, उजड़ीं, पर निर्वासित राम की असली राजधानी, जंगल का रास्ता अपने काँटों - कुशों, कंकड़ों-पत्थरों की वैसी ही ताजा चुभन लिये हुए बरकरार है, क्योंकि जिनका आसरा साधारण गँवार आदमी भी लगा सकता है। वे राम तो सदा निर्वासित ही रहेंगे और उनके राजपाट को सम्भालने वाले गरत अयोध्या के समीप रहते हुए भी उनसे भी अधिक निर्वासित रहेंगे, निर्वासित ही नहीं बल्कि एक काल कोठरी में बंद जिलावतनी की तरह दिन बिताएँगे। पर इस निर्वासन में भी सीता का सौभाग्य अखंडित है। वह राम के मुकुट को तब भी प्रमाणित करता है। मुकुटधारी राम को निर्वासन से भी बड़ी व्यथा देता है और एक बार फिर अयोध्या जंगल बन जाती है, स्नेह की रसधार रेत बन जाती है, सब कुछ उलट-पलट जाता है।

लेखक को अपनी दादी का एक गीत याद आता है, जिसमें भगवान राम के वनवास चले जाने पर अयोध्यावासियों की चिंता प्रकट की गई थी।

लेखक भारतीय समाज में कैसे पीढ़ियों के अंतर पर भी विचार करता है। जहाँ एक ओर पुरानी पीढ़ी, नई पीढ़ी की क्षमताओं पर विश्वास नहीं करती, अपितु उनकी क्षमताओं की उपेक्षा करती है, लेकिन दूसरी ओर नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी को रूढ़िवादी समझती है। वह उनकी भावनाओं की भी चिंता नहीं करती। पुरानी पीढ़ी का मन अपनी संतान के ऊपर संकट आने की कल्पना मात्र से उद्विग्न हो जाता है, किंतु नई पीढ़ी अपनी धुन में रहती है लेखक अपने मन के अंदर चलते तर्क - वितर्क में विवाह करने लगता है तथा स्वीकारता है कि इस नई पीढ़ी को हद्दों में रखना सरल कार्य नहीं है तथा पुरानी पीढ़ी को इसकी चिंताओं से मुक्त कर देना संगत नहीं है।